जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

[जीवन परिचय]

जगन्नाथदास रत्नाकर जी का जन्म सन 1866 ई० में काशी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ था। इनके पितामह का नाम तुलाराम तथा पिता का नाम पुरुषोत्तम दास था। इनके पिता भारतेंदु जी के मित्र थे बी०ए० एलएलबी० करने के पश्चात फारसी से एम. ए. की पढ़ाई माताजी के निधन के कारण पूरी न हो सकी। इनकी प्राचीन धर्म संस्कृति और साहित्य में गहरी आस्था थी। विद्यार्थी काल से ही उर्दू फारसी में कविता लिखते थे परंतु कालांतर में ब्रजभाषा में रचना करने लगे। साहित्य की सेवा में तत्पर हरिद्वार में 21 जून 1932 ईस्वी को इनका देहावसान हो गया।

ज्ञानसिंधुकोचिंगक्लसेज

[साहित्यिक परिचय]

साहित्य सुधानिधि और सरस्वती का संपादन रसिक मंडल का संचालन तथा काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना एवं विकास में योगदान दिया। अखिल भारतीय कवि सम्मेलन तथा चौथी ओरिएंटल कान्फ्रेंस के हिंदी विभाग के सभापति बनाए गए। इन्होंने अपने काव्य का विषय पौराणिक कथाओं एवं घटनाओं को बनाया है। भक्ति कालीन भावनाओं को रीतिकालीन अलंकार में पद्धति में अभिव्यंजित किया है। कला पक्ष में जितनी सफलता प्राप्त हुई है उतनी भाव पक्ष में भी प्राप्त हुई है। लक्षणा और व्यंजना दोनों शब्द शक्तियों पर बल दिया है।

प्रमुख कृतियाँ

रत्नाकर जी के गौरव ग्रंथों में उद्धव शतक और गंगावतरण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनके अन्य रचनाओं में श्रृंगार लहरी, गंगालहरी, विष्णुलहरी, रत्नाष्टक आदि प्रमुख हैं।

भाषा-शैली

रत्नाकर जी की भाषा ब्रज है, जो साहित्यिक भाषा के लिए अनिवार्य ठहरती है। भाषा में सफाई, छंद की शुद्धता , अलंकार की छटा नई-नई अनुयुक्तियां ही रत्नाकर जी के महाकवित्व के भाव को प्रदर्शित करती है। रत्नाकर जी की शैली आलंकारिक एवं चामत्कारिक चित्रणयुक्त है।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1866 ई०।
- **जन्म-स्थान**—काशी (उ० प्र०)।
- **पिता**—पुरुषोत्तमदास।
- **प्रमुख रचनाएँ**—उद्धव शतक, गंगावतरण। शृंगार-लहरी, गंगा लहरी, विष्णु लहरी।
- **भाषा**—प्रौढ़ साहित्यिक-ब्रजभाषा।
- **शैली**—चित्रण, आलंकारिक तथा चमत्कारिक शैली।
- **मृत्यु**—21 जून, सन् 1932 ई०।

YouTube Gyansindhu Coaching Classes

By: Arunesh Sir